1.5.2020 B.A. Part II Hons,
Paper- I

दक्षिण पूर्व एशिया में ब्राह्मणधर्म का उदय

Q. 1. Discuss The Origin and growth of Brahamanism.

दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीयों ने अपना राज्य ही स्थापित नहीं किया, अपितु अपने धार्मिक भावना, धार्मिक कृत्य, रहन, सहन सामाजिक जीवन इत्यादि को भी जिवित रखा। तथा उसे फलने फूलने का अवसर प्रदान किया। जिसप्रकार भारत में सदियों पहले वैदिक युग से ब्राह्मण धर्म का प्रचार था उसी प्रकार, दक्षिण पूर्व एशिया में भी उपनिवेश स्थापित करने के बाद प्रचलित रहा। ब्राह्मण धर्म के रूप में विभिन्न हिन्दू देवी-देवताओं तथा मत प्रचलित रहे। ब्राह्मण धर्म में शैवमत-वैष्णवमत प्रमुख स्थान बना लिया तथा शिव, विष्णु ब्रह्मा, विष्णु, महेश लक्ष्मी दुर्गा आदि देवताओं की पूजा अर्चना विभिन्न प्रकारों से किया जाता था।

दक्षिण पूर्व एशिया में सर्वप्रथम मलाया, हिन्देशिया में ब्राह्मण धर्म का प्रचलन था। ब्राह्मण धर्म के ~~प्रविलय~~ के विषय में पुरातात्विक अवशेष तथा लेख से पता चलता है कि ब्राह्मण धर्म को प्रचलित करने के लिए यदु तथा कुर्मों का वर्णन हमें बिनियों के लेखों तथा वहां पर प्राप्त स्तम्भों से लगता है। तीन लेखों में से दूसरों में मुलवमन द्वारा बहुसुवर्णक यज्ञ का उल्लेख मिलता है।

पहले लेखों में 20 हजार अथवा 10 हजार गायों का दान तथा तीसरे में बहुदान जीवन दान, कल्पवृक्षदान, तथा भूमिदान आदि का उल्लेख है जो ब्राह्मणों को दान दिये गये थे। इस बात का संकेत करती है कि बोर्नियों जैसे देश में ब्राह्मण का वैदिक ~~रूप~~ विकसित कर रहा था। बोर्नियों के ~~शक्ति~~ ब्रह्मा, शिव, गणेश, नन्दि तथा महाकाल की मुर्तियां पायी जाती है। मलाया में भी दुर्गा, गणेश नन्दी का भी मुर्तियां पायी

गयी है। मध्य जावा भी पश्चिमी जावा की तरह प्रभावित हो चुका था। 1652 शक सम्वत मिले एक लेख में शिवलिंग की स्थापना का उल्लेख है तथा शिव, ब्रह्मा, विष्णु और सम्राट की विद्वता तथा जावा की प्रशंसा की गयी है।

दक्षिण पूर्व एशिया के चम्पा में भी ब्राह्मण धर्म भारतियों की भाँति प्रचलित था। चम्पा का धार्मिक जीवन भारतीय परम्परा के आधार पर एक देवता के प्रति भक्ति उनके अन्य स्वरूप तथा सहिष्णुता की भावना को लेकर विकसित था। ब्राह्मण धर्म में शैवमत ने चम्पा के धार्मिक इतिहास में सदैव मान सम्मान तथा प्रमुख स्थान प्राप्त किया पर साथ ही विष्णु ब्रह्मा तथा अन्य ब्राह्मण देवी देवताओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वाजसनेय संहिता और शतपथ ब्राह्मण ने भी धार्मिक अनुष्ठान में हवन को पवित्र करने के लिए रस्सी के मंत्र के बंधन का विधान है।

ब्राह्मण ग्रंथों के इस मंत्र की स्पष्टता भी सम्भवर्मन के अभिलेख पर विद्यमान है। यह तभी सम्भव था जबकि चम्पा में याज्ञिक कर्मकांड की भलिभांति प्रथा है। राजा प्रकाश धर्म को माईसोन के लेख से अश्वमेध यज्ञ का उल्लेख है। और उसे सर्वाधिक पुण्य देने वाला कहा गया है। अभिलेखों के अनेक स्थानों पर यज्ञों, यज्ञ क्रियाओं तथा यज्ञ भाग का वर्णन मिलता है।

Scanned with CamScanner